ॐ सत्नाम साक्षी

चार साधन

प्रवचन

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

ॐ सत्नाम साक्षी

भूमिका

सत्पुरुषों के मुखारविन्द से उच्चरित अमृतवाणी आनन्द और शान्ति प्रदायिनी होती है। अपने जीवन में अनुभूत सत्य को जब वे सत्संग प्रवचनों में सरल सरस भाषा में प्रकट करते हैं तो जिज्ञासु का हृदय प्रेमानन्द में मगन हो जाता है। सत्गुरु सर्वानन्द जी महाराज का जीवन एकान्तप्रियता एवं सादगी से भरपूर था। आचार्य सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज में अटूट आस्था एवं अनन्य गुरु भक्ति उनकी रग रग में समाई हुई थी।

जिस प्रकार से उनका जीवन अनंत सद्गुणों से सुवासित था उसी प्रकार उनकी वाणी भी मनमोहक थी। मधुर कण्ठ से जब वे भजन गीत गाते थे तो भगवान श्री कृष्ण की मुरली सा आनन्द अनुभव होता था। उनकी अमृतवाणी का लघु पुस्तिका के रूप में प्रकाशन हो रहा है। इसे पढ़कर एवं हृदयंगम कर अपने जीवन को सत्मार्ग में लगाएं।

भगत प्रकाश
अमरापुर स्थान, जयपुर

ॐ सत्नाम साक्षी

चार साधन

भजन: चारों साधन तुमहीं साधो, ध्यान धरो दिन राती,
रे तुम पाओ झाती, मन एकांती, होवे शांती,
राम मिलन पढ़ पाती

प्रेम से बोलो हरे राम! सारे पूजने योग्य महात्मा मण्डल तथा प्रेमियो, सत्संगियो, गुरुमुखो अपने शरीर इन्द्रियों को सावधान करके, आसन बांधकर अपने मन को सावधान करके हर एक जीव, हर एक मनुष्य अपने मन को स्वयं समझावे। सत् शास्त्र, गुरु भगवान क्या करेंगे? कुछ नहीं करेंगे। ऐसा नहीं सब भगवान पर छोड़कर आलस करो। हे मेरे मन! आलस छोड़कर पुरुषार्थ कर। योग

वशिष्ठ पुराण में वशिष्ठ महाराज कहते हैं कि हे राम जी! पुरुषार्थ ही तेरा देव है। संत, गुरुदेव सब तेरी सहायता करेंगे। हिम्मत देंगे बाकी काम तेरे को करना है। श्री कृष्ण भगवान कहते हैं हे अर्जुन! लड़ाई तेरे को करनी है मैं बैठा रहूंगा। अर्जुन कहता है ठीक है स्वामी! आगे रथ पर बैठो। बोलो हरे राम। भगवान कहते हैं अर्जुन कहां चलाऊं? अर्जुन कहते हैं तुमको जहां चलाना है वहां चलाओ। भगवान कहते हैं अर्जुन लड़ाई तू करेगा। बाकी तेरा प्रेम, श्रद्धा है मैंने पहले ही सब को मार दिया है तू निमित मात्र हो मैंने पहले से ही मार दिया। ये सारे मरे पड़े हैं। सत्गुरु भगवान की बड़ी ताकत है हिम्मत देंगे। पर तेरे पीछे। आगे तू। बाकी इतनी बात है कि किसी को शंका हो। अगर तेरा पुरुषार्थ रुक गया, चल नहीं सका तो संत, गुरु पर जवाबदारी है बाकी जब तक तेरा पुरुषार्थ है तब तक तू हट मत। अर्जुन का भी जब तक पुरुषार्थ चला तब तक लड़ाई की। भीष्म पिता खड़ा हुआ तब

लड़ाई हुई तो अर्जुन का पुरुषार्थ रुक गया। कृष्ण भगवान ने कहा कि इसका पुरुषार्थ अब छूट गया तब रथ का पहिया हथियार बनाकर आगे आ गये। भीष्म पिता ने उनके आगे तलवार रखदी और कहा - प्रभु! आप से लड़ाई नहीं करनी है। अर्जुन का अभी पता चले। आप से मेरे को लड़ाई करनी नहीं फिर क्यों मेरे से लड़ाई कर रहा है कहा - कि प्रभु दुर्योधन के आगे शपथ ली थी कि कृष्ण भगवान से लड़ाई करके हथियार उठवाऊंगा। सो तेरे को झूठा बनाया है भगवान ने अटकल (युक्ति) बहुत अच्छी की है। बोला - भीष्म पिता बात सुनी है तू मेरा है प्यारा भगत। तूने प्रतिज्ञा की थी कि कृष्ण भगवान को हथियार उठवाऊंगा। मैंने सोचा भगत झूठा न हो जाये इसलिए मैंने हथियार उठाया है। मैं झूठा हो जाऊं परन्तु मेरा भगत झूठा नहीं हो। इतनी भगवान संतों में दया है। बाकी पुरुषार्थ तेरे को करना है। भगवान संत, गुरुओं को जो देना है वे पहले से ही दे दिया है।

''देना था सो दे दिया, दीनी मानुष देहि।
राम कुछ राख्यो नहीं, हरि सुमरन कर लेहि।।

महात्मा कहते हैं - भगवान को, देवताओं को जो आशीर्वाद करना है वह पहले ही कर ली। अब तेरे पुरुषार्थ के पीछे तेरी सहायता करेंगे। भगवान ने कोई भी वस्तु अपने लिए छिपा के नहीं रखी है जितने भाई - माई बैठे हो। याद करना। आज सारे दिन विचार करना। कि भगवान ने हमारे से क्या छिपा के रखा है। अगर कुछ छिपा रखा है और तुम्हें नहीं दिया है अभी तो तुम्हें संत लेकर के देंगे। यह विश्वास करना। बताना कि क्या छिपाकर रखा है। मनुष्य चोला, बुद्धि दी है। बुद्धि भी तेज दी है। बोलो हरे राम। कर्मों के अनुसार सभी को धन, पुत्र, पदार्थ, मकान भी दिया है। अपना स्वरूप भगवान का स्वरूप, देवी का स्वरूप, श्री रामचन्द्र, श्री कृष्ण का जो रूप है, ऐसा अपने जैसा स्वरूप दिया है। हम गये

कराची गुरु महाराज की मण्डली। हम गये एक हनुमान के मंदिर में मंगलवार का दिन था। दो मंदिर थे एक मंदिर में काफी भीड़ थी और दूसरे मंदिर में कोई जा रहा था और कोई नहीं जा रहा था। हम गये उन्होंने कहा - इस मंदिर में बहुत ज्यादा भीड़ है। बोला, इस मंदिर में पांच मुख वाला हनुमान है, उधर है एक मुख वाला हनुमान। साध ने कहा दूसरे मंदिर वाले पुजारी को कि तू भी पांच मुख वाला हनुमान बना उसमें बहुत भीड़ लगी हुई है। पुजारी ने कहा - बाद में आकर देखना ग्यारह मुख वाला हनुमान बनाऊंगा। अपना जैसा स्वरूप है वैसा ही उनका स्वरूप भी है। प्रेम से बोलो हरे राम। जितने प्रेमी बैठे हो। हे मेरे मन! पुरुषार्थ कर। पुरुषार्थ करके साधन कर।

''चारों साधन नित ही साधो, ध्यान धरो दिन राती।''

पहले साधनों की साधना कर -

१ विवेक २ वैराग्य ३ खट् सम्पदा ४ मुमु क्षता

विवेक किसको कहते हैं :- वेदान्त कहता है :-

आत्म अविनाशी अचल, जग तांते प्रतिकूल।
ऐसो ज्ञान विवेक है, सब साधन को मूल।।

आत्म अविनासी है, अचल है, स्वयं प्रकाशी है, एकरस है, जगत परिणाम रूपी है, दु:ख रूप है। प्रेम से बोलो हरे राम। जिसको विवेक प्राप्त हुआ है वो आगे चल सकेगा। ये ग्यारह साधन में से पहले-पहले है - विवेक इन सात साधनों का विचार करेंगे तो इसमें से क्या होगा जैसे किसी भी वस्तु का बीज बोने से वह धीरे-धीरे अंकुरित होगा उसी प्रकार ये साधन करने से बीच में से वैराग निकलेगा। सत् से प्रीत लगती जायेगी। और असत् से प्रीत हटती जायेगी। मोह टूटता जायेगा,वैराग जागेगा। दूसरा साधन है वैराग का। वैराग किसको कहते हैं?

ब्रह्म लोक लौं भोग जो, चहे सभन को त्याग।
वेद, अर्थ, ज्ञाता, मुनी, कहत ताहिं वैराग।।

मृत्यु लोक से ब्रह्म लोक तक भोग उनकी इच्छाओं को त्याग। वेद शास्त्र के ज्ञाता तत्त्वज्ञ महात्मा उसको वैराग कहते हैं। शास्त्र में नौ प्रकार का लिखा है। गुरु महाराज ने समय के अनुसार तीन प्रकार का वैराग रखा है। उत्तम वैराग, मध्यम वैराग, कनिष्ठ वैराग। याद करना।

कनिष्ठ वैराग किसको कहते हैं संसार के दुःख से लगे। संसार के दुःख माया का, धन, पुत्र का कई दुःख हैं। दुःख लगे तो वैराग लग जाये। ये कनिष्ठ वैराग। कनिष्ठ क्यों लिखा। कोई व्यक्ति धन से लखपति है, पांच लाख कम पड़ जाये तो वैराग पैदा हो जाता है फिर छः महीने के बाद अगर बारह लाख रुपये मिल जाये तो वैराग टूट गया इसलिए वो कनिष्ठ है।

मध्यम वैराग मरने के दु:ख से, बोलो हरे राम। मरने का डर भी एक वैराग का कारण है। गुरु महाराज की सोलह शिक्षाएं छपी हुई हैं। प्रेमियों के घर पर हैं और जिनके घर पर नहीं है तो वह लेकर कांच में फ्रेम करवाकर सभी पढ़ो। पढ़कर पक्की करो। अगर घर में कोई दु:ख हो, घबराहट हो, या चिन्ता हो मोह हो तो उसे पढ़ने पर उसमें से कोई ऐसी शिक्षा निकलेगी जो दु:ख दूर हो जायेगा। मन खुश हो जायेगा। उसमें एक शिक्षा आती है।

''मौत अपना याद कर ले, तिहं भुलाओ ना कभी।
जान मन में मरण का दिन, निकट आया है अभी।।

शरीर रहने वाला नहीं है, मुसाफिर हूं। प्रेम से बोलो हरे राम। अभी पूने में ज्योतिषी आये तो प्रेमी ने कहा स्वामी जी! मेरा हाथ देखो। मेरा भाग्य क्या है? हाथ दिखाते हैं भाई-माई। ज्योतिषी हाथ देखकर भाग्य क्या है आज दिन कौनसा

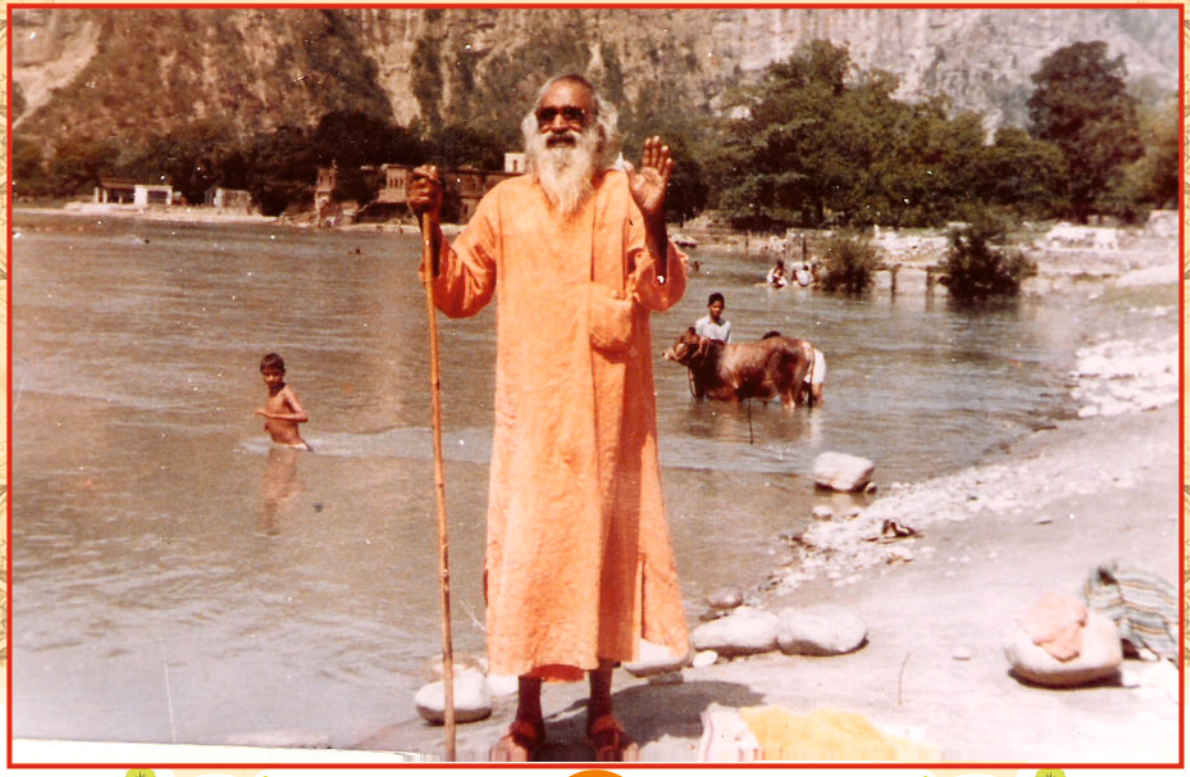

है? मंगलवार। दूसरे मंगलवार पर १० बजे तेरा शरीर समाप्त हो जायेगा। तेरा दाना-पानी पूरा हो जायेगा। प्रेम से बोलो हरे राम। बाकी सात दिन तू है आठवें दिन तू मर जायेगा। विश्वास होना चाहिए। ये मोह बड़ी बात है अर्जुन जैसे वीर भी मोह में फंसकर रोने लगे। मोह टूटने से वैराग लगेगा। कबीरदास ने कहा है :-

''मारू एक मंगल चार, संत जना के प्राण अधार।
आठ पहर जो मारू गावे, तांको काल निकट नहीं आवे।
कहत कबीर मैं मारू गाया, मारू गाय परम पद पाया।।

मारू (मृत्यु) याद करके पाप, कर्म, झगड़ा नहीं करेगा। मोह टूटा, आसक्ति टूटी। तो मुक्त हो जायेगा। मुक्त नाम है आजाद होने का। उसका चित्त आजाद हो जायेगा। मोह टूट जायेगा। मिलेगा तो भाग्य से मिलेगा। सच करके पूछो। ऐसे भी नहीं कि भाग्य खुलेगा तो अपने आप वैराग्य लगेगा। पुरुषार्थ करना

पड़ेगा। अगर तेरा पूरब जन्मों का भाग्य नहीं खुला है तो अभी पुरुषार्थ कर। आगे के लिए भाग्य खोल। मिलेगा तो भाग्य से-

जंहिं माया ममता तजी, सबते भयो उदास।
कह नानक सुन रे मना, तिंहं घट ब्रह्म निवास।।

मध्यम वैराग, मरने के डर से जैसे राजा परीक्षित को लगा सात दिन में मुक्त हो गया। हम क्यों नहीं मुक्त होते हैं क्योंकि हम भी राजा परिक्षत की तरह साधन करें तो सात दिन में मुक्त हो जायेंगे।

उत्तम वैराग बालवस्था में थोड़े से उपदेश सुनने से वैराग लग जाता है जैसे गोपीचन्द को वैराग लगा। प्रेम से बोलो हरे राम। जिस समय में गोपीचन्द को रानियां स्नान कराने के लिए तैयार हुई ऊपर माता बैठी हुई थी। उसने नीचे देखा। गोपीचन्द स्नान कर रहा है। नेत्रों में से जल आया। आकर गोपीचन्द के

ऊपर आंसू की बूंद गिरी। गोपीचन्द ने कहा - बरसात पड़ रही है क्या ? बादल तो दिखने में नहीं आ रहे हैं। जैसे ही ऊपर देखे तो देखा माता रो रही है तो कहा मैं ऊपर देखके आता हूं क्या है? चढ़ा ऊपर माता को नमस्कार किया और कहा - तेरे को किसी ने कुछ कहा है? किसी बानी (दासी) ने, दूत ने कुछ कहा है? माता ने कहा किसी ने मुझे दुखाया नहीं है - हे पुत्र तू जाकर के स्नान कर। कहा-माता! मेरे को स्नान नहीं करना है पहले तू बता। तूं रो क्यों रही है। बोली तू इस बात को छोड़ दे। तू जाकर के स्नान कर। प्रेम से बोलो हरे राम। माता ने कहा - सच्ची बात बताऊं। पुत्र ने कहा - हां माता सच्ची बात बता। तू स्नान कर रहा था। मैंने तेरा शरीर देखा तो मेरे आंखों में से आंसू आ गये। गोपीचन्द कहता है - हे माता! मेरा शरीर काला है, कुरूप है? माता बोली जैसे तेरे पिता को स्नान कराती थी तो उसका शरीर चमकता था और उसका शरीर भी एक - दिन शमशान में जल गया

ऐसा सुन्दर शरीर शमशान में जल गया। फिर माता मैं क्या करूं? बोली गोविन्द का भजन कर। गोपीचन्द बोला - भजन के लिए तो मुझे मालूम नहीं है तो कहा मालूम नहीं है तो संतों के पास जा। संतों के पास जा तो तेरे को भगवान का रास्ता दिखायेंगे। भक्ति का रास्ता बतायेंगे। इधर भरथरी जी ने शहर से १० मील दूरी पर छावनी लगाई थी वहां के लिए गोपीचन्द चल पड़े - उस समय रानियों ने कहा स्नान किया? बोला कर लिया और चला। माता को भी पता नहीं था उन्होंने कहा - पुत्र कहाँ जा रहा है वो भी नीचे उतर के आयी। प्रेम से बोलो हरे राम। शहर के बहुत लोगों ने उसे बुलाया। नंगे पैर चलता गया। सीधे नहर के किनारे पर पहुंचा और नहर के किनारे पर गोरखनाथ की छावनी के दरवाजे पर भरथरी खड़े थे। दूर से देखा तो उन्होंने सोचा कौन है जब पास में आया तो उन्हें नमस्कार किया। मामा था तो नमस्कार किया। कहने लगा। पुत्र कुछ खबर चार बता। बोलो हरे राम।

गोपीचन्द से भरथरी, पूछा सारा हाल।
कहो पुत्र क्या होइया, क्या गड़बड़ भोचाल।।

हे राजन् बताओ पूरा हाल। सच्ची सच्ची। बता क्या बात है जो तू भाग के आया है। तब वैराग तो था। आंखों में से पानी आया। सारा हाल बताया संसार का दरवाजा बन्द करके आया हूं क्यों :-

माता का उपदेश सुन, हुआ राग वैराग।
गुरू शरण में आया, जागा हमरा भाग।।

बस अब घर नहीं जायेगा। गोविन्द का भजन करना। उत्तम वैराग गोपीचन्द को गुरुनानक जी को बचपन से, कबीरदास, सत्गुरु टेऊँराम महाराज को बचपन से ही वैराग लग गया। प्रेम से बोलो हरे राम। ये तीसरा वैराग विवेक से है - तीसरा साधन खट्सम्पदा। जिसमें छः साधन है लेकिन साधन एक है। कौनसे है छः साधन -

सम दम श्रद्धा तीसरी, समाधान उपराम।
छठी तितिक्षा जानिये, भिन्न-भिन्न यह नाम।।

सम नाम किसका है और दम नाम किसका है ?

मन विषयन ते रोकनो, सम तिहं कहत सुधीर।
इन्द्रिय गण को रोकनो, दम भाखत बुधिवीर।।

मन के फुरनों को रोककर, मन को गुरु मन्तर में, आत्म चिन्तन में लगाना। इन्द्रियों को दमन करना। बोलो हरे राम। श्रद्धा किसको कहते हैं ?

सत्य, वेद, गुरु वाक्य है, श्रद्धा अस विश्वास।
समाधान तांको कहत, मल विक्षेप को नास।।

सत्-शास्त्र, महात्मा गुरु के वचन में विश्वास निश्चय रखना। विश्वास की जय है। आधा काम करेगा विश्वास और श्रद्धा। आधा काम करेंगे अपने साधन। याद करना।

''समाधान तांको कहत है, मल विक्षेप को नास।''

मन की चंचलता, विक्षेपता, बहुत ज्यादा मन चंचल है। प्रेम से बोलो हरे राम।

''साधन सहित कर्म सब त्यागे, लख विष सम विषयन से भागे।
दृग नारी लखि हवै जिन्ह ग्लाना, यह लक्षण उपराम बखाना।।

कर्मों के साधन का त्याग, कर्म भी छोड़े, साधन भी छोड़े इसमें कोई शंका पड़े । साधन दो प्रकार के होते हैं -

अन्तरंग साधन बहिरंग साधन

१ बहि रंग साधन अपने आप टूट जायेंगे लेकिन अन्तरंग साधनों को तोड़ना है। कर्म उसको भूल जायेंगे। मस्ती, मौज में। जब उसे वैराग आया तब कर्म अपने आप चले जायेंगे उसे याद ही नहीं रहेंगे। जिस समय मीरा को प्रेम लगा है। मीरा पहले पाठ पढ़ती थी, ग्यारस का व्रत रखती थी। अब कुछ भी नहीं करती है अब

बिल्कुल ही कर्मों से भ्रष्ट हो गई है सभी भाई-माई मिलकर मीरा को कहने लगे है मीरा खबर तो बता! तूने तो सारे कर्म ही छोड़ दिये है।

''गोविन्द लीनो मोल सखीरी मैंने, कोई कहे महंगो, कोई कहे सहंगो
लीनो तराजू तोल सखी री, मैंने गोविन्द लीनो मोल सखीरी

मैं तर जाती हूं भवसागर से। कोई कहते हैं भक्ति करना बहुत कठिन है और कोई कहता है भक्ति करना बहुत सरल है। भक्ति करना कौनसी कठिन है बहुत पांव छूते हैं, रोटी खिलाते हैं, जय-जय बोलते हैं, हाथ जोड़ते हैं, भक्ति करने में कौनसी मुसीबत है, भक्ति करना बहुत सरल है। और कहते हैं भक्ति बहुत कठिन है :-

जप, तप संयम ध्यान न आवत।
हाथ बजाऊँ ढोल सखीरी ।।

जप, तप, ध्यान सब भूल गई है। बोलो हरे राम। नफरत नहीं आई है कि

मैं नहीं करूं। मेरे पास समय नहीं है बिल्कुल भी फुरसत नहीं हैं। ''हाथ बजाऊं ढोल'' बोलो हरे राम। मैंने प्रेम की पोशाक पहनी है। कोई क्या कह रहा है, और कोई मस्ती कर रहा है, कोई पागल कह रहा है।

''मैं हाथ बजाऊं ढोल''

मैंने ढोल बजाकर बहुत मौज की है कहने लगे कि तेरे को मिला क्या है?

'मीरा कहे मेरे घर आये ठाकुर सर्वस्व दिया घोल सखीरी मैंने
गोविन्द लीनो मोल सखीरी मैंने।।

बोली - मेरे घर पर भगवान आये हैं। बोले - भगवान पहले नहीं थे क्या? मीरा ने कहा - पहले भगवान सामान्य रूप में थे। अब विशेष रूप से आये हैं। प्रेम से बोलो हरे राम! वैराग होगा, सच्चा प्रेम होगा। उस समय छोटे - छोटे कर्म भूल जायेंगे। कई महात्मा अनेक कर्म करते हैं। निष्काम व निर्मान होकर करते हैं और जो कामना के द्वारा कर्म करते हैं। वह कर्म बन्धन वाले हैं। प्रेम से बोलो हरे राम।

और अन्तरंग साधन करो बहिरंग साधन अपने आप छूट जायेंगे। जैसे इस बडे असू (भाद्रपद, आश्विन) के महीने में मोर ज्यादा होते हैं। बडे असू (भाद्रपद, आश्विन) के महीने में मोर के पंख अपने आप झड़ते जाते हैं। वैसे मोर को पकड़कर पंख तोड़ो तो मोर मर जायेगा। जब वैराग, प्रेम होगा तो छोटे- छोटे कर्म अपने आप छूट जायेंगे। प्रेम से बोलो हरे राम। छठा नाम है - तितिक्षा। तितिक्षा नाम किसका है - सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास सहन करना। जो प्रभु बनाये उस पर राजी रहना चाहिए। संतोष होना चाहिए। सोलह शिक्षा में एक शिक्षा आती है -

जो बनावे ईश्वर तुम ताहिं पर राज़ी रहो।
जा बनी सा है भली, सब यूं सदा मुख से कहो।।

जो प्रभु बनावे उस पर संतोष करना चाहिए। ये तीसरा साधन है।

चौथा साधन है :

ब्रह्म प्राप्ति और बंध हानि यही मोक्ष को रूप।
ताकी चाह मुमुक्षता, भाखत मुनिवर भूप।।

चौथा साधन है मुमुक्षता। ब्रह्म की प्राप्ति बंध माना संसार का अभाव। प्रेम से बोलो हरे राम। अभाव माने देखने में नहीं आयेगा क्या? आयेगा। जैसे पहले देखते हैं, वैसे नहीं। उनको आंखें नहीं हैं क्या? हरे राम। ज्यादा लोग बोलते हैं। सातवीं भूमिका में खिलायेगा भी दूसरा, क्रिया कर्म भी दूसरा करायेगा। तीसरा खाट पर बैठा रहेगा। राजा जनक विदेह मुक्त यानि जीवनमुक्त से भी ऊपर विदेह मुक्त है। महात्माओं के वचन में सार तत्व रखा हुआ है पहले जैसे देखते थे कि संसार नास है, असत् रूप है, सारा संसार ब्रह्म रूप है। खायेगा, पीयेगा, सारा व्यवहार काम करेगा। लेकिन उसके निश्चय में दूसरी बात होगी। जैसे राजा एवं वजीर शिकार करने गये। एक पहाड़ में शिकार किया। उस पहाड़ी में पानी नहीं था। शिकार करते - करते १२ बजे का समय हुआ। पानी आकर थोड़ा बचा। राजा ने कहा - पानी दो प्यास लगी है। वजीर ने कहा - इस जंगल में पानी है ही नहीं।

राजा ने कहा - चलो वजीर ने घोड़े पर चढ़ने के लिए कहा और राजा को पकड़ने के लिए दिया और राजा को प्यास के कारण पकड़ा नहीं जा रहा था।

ईश्वर बिन न मिले सरस्वती, गुर बिन मिले न ज्ञान।
जल बिन हंसा उड़ गया, अन्न बिन तजे प्रान।।

भूख को सहन कर सकते हैं लेकिन प्यास को सहन नहीं कर सकते हैं। प्रेम से बोलो हरे राम। वजीर ने कहा - घबराओ मत। अब हम पास आ गये हैं। जंगल से निकलते देखा एक नदी बह रही थी। बड़े खुश हुए राजा ने वजीर को कहा - अब मैं नहीं चल सकता हूं। मैं इस पेड़ के नीचे बैठा हूं। राजा को पेड़ के नीचे आसन बिछाकर बिठाया। वजीर पानी लेने के लिए गया - लेकिन वो नदी नहीं थी। वह सूरज की रोशनी थी दूर से नदी लग रही थी। वजीर ने देखा एक मुसाफिर आ रहा था। वजीर ने कहा - मेरे को प्यास लगी है और राजा को भी

प्यास लगी है। मैं इधर बैठा हूं। तू सामने नदी से पानी ला दे। बोला नदी कहां है? वो घबराने लग गया। वजीर ने कहा क्यों काम नहीं करेगा? बोला - परन्तु मैं इतना सुबह से चला हूं। १०-१२ मील चला हूं। मुझे तो कही पर भी पानी नजर नहीं आया परन्तु मुझे कहीं कीचड़ भी नहीं नजर आई बिल्कुल सूखा था। मैंने भी देखा नदी नहीं है। मुझे भी प्यास लगी है। वजीर को आया गुस्सा और वह उसको राजा के पास लेकर के आया और बोला - पानी नहीं लाकर दे रहा है। बोला मैंने १०-१२ मील चला हूं। मुझे तो कहीं पर नदी नजर नहीं आयी है। मेरे को उल्टा प्यास लगी पड़ी है। राजा ने कहा - वजीर और मुसाफिर दोनों पानी भरने जाओ मैं इधर बैठा हूं। दोनों चले वजीर को निश्चय है कि पानी है परन्तु मुसाफिर के निश्चय में पानी नहीं है। यह सारा संसार भी ऐसे दिखता है पर है नहीं। महात्माओं ने समझाने के वास्ते बहुत नाम रखे हैं परन्तु अनामी है। शास्त्रों में लिखा है

अनिर्वचनीय। अनिर्वचनीय किसको कहते हैं जो सत् भी नहीं हो असत् भी नहीं हो उसे कहते हैं अनिर्वचनीय। ये संसार अनिर्वचनीय है सत् भी नहीं है। असत् भी नहीं है गुरु महाराज ने कहा -

जग साचा वा मिथ्या है ये मुख से कहा न जाता है।
ज्ञान दृष्टि से देखत हूं जब, रंचक नजर न आता है।।
इन नैनों से देखत हूं तो, जग सभ को भरमाता है।
कहे टेऊँ वेदान्त इसी को अनिर्वचनीय कह गाता है।।

क्या कहें जग साचो मिथ्या - क्या कहें जग सच्चा है या मिथ्या सत् कहूं तो है नहीं मिथ्या कहूं तो भासता है । अन्तर्मुख अपनी वृत्ती को धीरे - धीरे लीन कर । नेत्र बंद कर । बाहर का तो नहीं दिखता है परन्तु अन्दर का सारा दिखता है। लेकिन अन्तर्मुख होकर अपनी वृत्ती को लीन कर। अपने स्वरूप में शरीर को लीन कर संसार है नहीं । सत् भी नहीं असत् भी नहीं। सत् और असत् का आखिर

फैसला तो होगा। अज्ञानी जीव को यह निश्चय है कि जितना सुख पाऊं - शादी होगी, पुत्र होंगे, पोते होंगे, मकान होंगे, संसार में आनन्द होगा। प्रारब्ध के हुक्म से ज्ञानी - अज्ञानी दोनों जीव संसार में निकलते हैं। खाना - पीना, घूमना-फिरना सब एक जैसा है पर उसके निश्चय में है कि कुछ है नहीं और उसके निश्चय में है कुछ है। प्रारब्ध के हुक्म से सभी चल रहे हैं। बोलो हरे राम।

टेक: जो कुछ तुम यह देख रहे हो, सो सब खेल तुम्हारा है।
तुम ही खेल बनाया सारा, तुम ही देखनहारा है।
तेरे होते सब कुछ होवे, तुझ बिन नहिं संसारा है।
तेज तुम्हारे से प्रकाशत, अग्नी रवि शशि तारा है।
सबके अन्दर तूंही रमिया, तूंही सबसे न्यारा है।
कहता टेऊँ तीन लोक में, तेरा ही दीदारा है।

ये सब तेरा खेल है । तू है तो संसार है नहीं तो संसार है नहीं। जो गये हैं अपने मित्र प्राणों से प्यारे उनके लिए संसार है या नहीं। ये संसार तेरे लिए भी नहीं है और नाहीं मेरे लिए है ये केवल संसार खेल के समान है। निश्चय विश्वास बहुत कठिन है। विश्वास पूरा हुआ तो जन्म-मरण का फेरा टूट जायेगा। प्रेम से बोलो हरे राम। जितने प्रेमी बैठे हो सत्संग करो भली परन्तु मोक्ष की इच्छा करो। संसार के पदार्थ की इच्छा न होकर मोक्ष की इच्छा रहे। गुरु महाराज ने कहा है -

मुक्ती के हित सत्संग करिये, श्रद्धा मन में धारो जी।
संत वचन को श्रवण कर पुनि बैठ एकान्त विचारो जी।।
फेर उसी में निदिध्यासन कर, संसा भ्रम निवारो जी।
कह टेऊँ तत्त्वमसि ये सोधे, जन्म-मरण दुःख टारो जी।।

मोक्ष के वास्ते श्रद्धा मन में विश्वास रखकर सत्संग करिये। संतों के

वचनों को श्रवण करके एकान्त में बैठकर उसका विचार करिये। ऐसे नहीं एक कान से सुनो दूसरे कान से निकाल दो। इस पर दृष्टान्त तो काफी है लेकिन अब समय पूरा हुआ है। ये कथा इधर रखते हैं। प्रेम से बोलो हरे राम। श्रवण करके फिर उसका मनन कर। संसा भ्रमों को दूर कर। और शंका हो तो संतों से पूछना। अगर किसी को शंका हो तो वह भली कहे। चौथा साधन पूरा हुआ। बाकी सात साधन और सात भूमिकायें हैं। अभी समय पूरा हुआ है। जो चार वचन सुनते हो उसका विचार करो विचार के बिना कुछ बनने वाला नहीं है। इसमें भगवान की आशीर्वाद चाहिए और पुरुषार्थ चाहिए।